International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-09-2020; Accepted: 13-10-2020; Published: 28-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 157-159

मिथिलेश्वर के उपन्यास 'यह अंत नहीं' में स्त्री जीवन: शोषण और संघर्ष

सुनील कुमार वर्मा
शोधार्थी, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात, भारत

सारांश
भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री का कार्यक्षेत्र घर माना जाता है| उसकी इच्छा-अनिच्छा के बावजूद उसे घर में ही रहना पड़ता हैं| स्त्रियों के घरेलू जीवन जीने के पीछे अनेक रूढ़िवादी एवं परम्परागत कारण होते हैं| पहला कि, बाहर उन्हें वैज्ञानिक युग की हवा लग सकती है जिसके कारण पुरूष वर्चस्व को चुनौती मिल सकती है| दूसरा कि, स्त्रियाँ अबला होती हैं बाहर जाएँगी तो उनके साथ बालात्कार एवं छेड़-छाड़ की घटनाएँ हो सकती है| तीसरा कि, स्त्रियों को सम्पत्ती समझकर उन्हें घरों में रखा जाता है| चौथा की, जिस परिवार की स्त्रियाँ घरों में रहती हैं उस परिवार को सुख-सम्पन्न एवं इज्जतदार की नजर से देखा जाता है|

संदर्भित उपन्यास में भोजपुर जिले के खवासडीह नामक गाँव में नरोत्तम कहार दम्पत्ति के दो पुत्र चुनिया और बुंतु हैं| इस गाँव के बड़े खेत मालिक श्रवण सिंह का बनिहार नरोत्तम है| चुनिया का बचपन उसके बाबूजी के साथ खेत-खलिहानों में गुजरा था| चुनिया के बड़े होते ही श्रवण सिंह के घर नौकरानी बनना पड़ा| चुनिया को घरलू जीवन अच्छा नहीं लगता| वह खेत-खलिहानों में उन्मुक्त विचरने वाली घर में घुटन का अनुभव करती, लेकिन उसे सामाजिक संरचना का अंग बनना पड़ा| "उसका मन श्रवण सिंह के घर से भाग-भागकर खेत-खलिहानों की ओर चला जाता| लेकिन काम में ढिलाई देख मालिक के यहाँ उसे डाँट पड़ती –"हम देख रहें हैं चुनिया, किसी भी काम में तेरा अंग (मन) नहीं लग रहा है .....ध्यान तो तेरा कहीं और उड़ा रहता है| ऐसा करेगी तो कैसे चलेगा ? खाना, कपड़ा, और दरमाहा देकर तुझे रखा है | तेरी यह एंगी-टेंगी हम बर्दास्त नहीं करेंगे .....|"

इस पर माई-बाबू से वह श्रवण सिंह के यहाँ मन न लगने की बात कहती तो वे भी उल्टे उसी पर बरस उठते –"अब खेत-बघार में चौकड़ी भरने की उमिर गयी नन्हकी ....| मन लगा के रहना सीखो| श्रवण सिंह का घर जाना-पहचाना है| वहाँ गुजर नहीं करेगी तो और कहाँ करेगी ....?"

चुनिया ने भी अपने मन को समझा दिया कि अब दूसरा विकल्प नहीं| श्रवण सिंह के घर की परिधि को ही अपनी नियति मान कोल्हू के बैल की तरह आँख मूँदकर उसमें जुत गई|"1

विवेकी राय स्त्रियों के इस घरेलू जीवन को बंदी जीवन मानते हैं| उनके अनुसार, "आश्चर्य की बात तो यह है कि इस प्रकार के बंदी जीवन का मूल्य स्त्रियों के निगाहों में बड़ा ऊंचा, आदरणीय एकं भाग्य-सम्भव समझा जाता है|"2 स्त्रियाँ घर से बाहर आवश्य निकलना चाहती हैं| वे तीर्थ और पूजा-पाठ के बहाने घरों से इसलिए निकलती हैं कि उन्हें बाहर की दुनिया देखने की अभिलाषा होती है|

समाज में स्त्रियों का एक ऐसा वर्ग है जो सम्पन्न घरों में नौकरानी का कार्य करके अपने परिवार का भरण-पोषण करती हैं| इन स्त्रियों का परिवार आर्थिक रूप से कमजोर होता है इस कारण ये अधिकतर अशिक्षित ही होती हैं| अशिक्षित होने के कारण उनका आर्थिक, मानसिक और शारिरिक शोषण किया जाता है| नौकरानियों को उचित मजदूरी नही दी जाती| मालिक उन्हें हर समय काम करते हुए देखना चाहते हैं जैसे वे इन्सान नहीं कोई मशीन हों, उनका शारीरिक शोषण भी किया जाता है जब इसका विरोध करती हैं तो उन्हें काम से निकाल दिया जाता या उनकी हत्या कर दी जाती| मानवीय त्रुटी के कारण कोई वस्तु नष्ट हो जाती है तो उन्हें मालिक के प्रकोप का सामना करना पड़ता| वह बेरोजगार होने के डर से उत्पीड़न को सहती रहती हैं| उपन्यास में चुनिया को नौकरानी के रूप में उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है| "सुबह एकदम तड़के ही उसे श्रवण सिंह के घर आ जाना पड़ता और शाम अँधेरा घिरने पर उसे अपने घर वापस जाना होता| दिन-भर वह श्रवण सिंह के यहाँ खटती रहती| .....चुनिया "उस घर की अनिवार्यता और परेशानी दोनों का घटक वही बन गई| बिना चुनिया के घर का कोई भी काम सम्भव नहीं| किसी दिन तबीयत मंद होने पर वह श्रवण सिंह के यहाँ नहीं जाती तो दुसरे दिन पाती की रसोई के जुठे बर्तन से लेकर घर की सफाई तक के सारे कार्य उसकी प्रतीक्षा में पड़े हैं| आँगन को सफाई नहीं हुई तो चुनिया! गिलास गिर कर फुट गया तो चुनिया! बिल्ली दूध पी

गयी तोचुनिया! मुन्ना रो रहा है तो चुनिया! रसोई में पानी नहीं है तो चुनिया! बारिश में कपड़े भीग गये तो चुनिया ! अनाज में चूहे लग गये तो चुनिया! रिश्तेदार की खातिर नहीं हुई तो चुनिया! मालकिन बीमार है तो चुनिया! सुबह चुनिया! दोपहर चुनिया! शाम चुनिया .....|

और चुनिया थी कि कच्छा भिड़कर (कमर कसकर) तैयार हो गयी थी| न कभी ना कहती और न थकती| मालकिन जो भी रूखा-सूखा दे देती, वह भर छिपा चढ़ा लेती और जाँगर ऐसे खटाती जैसे कोई हाड़-मांस की प्राणी नहीं, कल-पुर्जे की मशीन हो .....|"3

नौकरानियों पर "चौबीस घंटे उनके घर काम की तलवार उसके माथे लटकती रहती| तनिक भी विलम्ब नहीं होना चाहिए| घर-दुआर और चौका बर्तन की सफाई में कोई कमी नहीं दिखे| परिवार के किसी सदस्य के आदेश का उल्लघंन न हो नौकरानी की अपनी कोई रुचि, इच्छा और इज्जत उनकी नजर में नहीं| मालिक के घर-दुआर के लिए ही जीना-मरना, यंत्र बनकर रहना और जानवर की तरह खटना|"4 नौकरानियों को अनेक घरेलू कार्य करने के बाद भी उनके उत्पीड़न का अंत नहीं है|

बालात्कार एक प्रमुख सामाजिक समस्या रही है| जनसंचार माध्यमों में इस समस्या की खबरे लगातार आना गम्भीर चिंता का विषय है| सरकार ने बालात्कार के विरूद्ध अनेक नियम कानून बनाये लेकिन यह समस्या समाज में बनी हुई है| इस सम्बन्ध में सामाजिक प्रयास की भी आवश्यकता है| उपन्यास में इस विकृति को संदर्भित किया गया है| चुनिया के माई-बाबू को चुनिया के प्रति अनहोनी का डर बना रहता था| वे सचेत रहते थे| नरोत्तम चुनिया को श्रवण सिंह के घर नौकरानी इसलिए रखता है की वह उसी घर में बनिहार था|" खुद नरोत्तम भी उसी घर में बनिहार था, इस नाते चुनिया को देखते रहने तथा उसपर निगरानी बनाए रखने का कार्य भी कर सकता था| लड़की जात को अनजाने और अपनी आँख से ओझल किसी के घर में वह कैसे भेज देते .....?"7 चुनिया के माई चुनिया को शाम के समय श्रवण सिंह के घर से जल्दी आ जाने को कहती "औसहीं रोज आ जाना चुन्नो .....जुग जमाना ठीक नहीं| सेआन लड़की को अन्हार भइल नहीं आना चाहिए ....|"8

श्रवण सिंह के घर चुनिया नौकरानी थी| श्रवण सिंह का बेटा अगम चुनिया से यौन सम्बन्ध बनाना चाहता था, लेकिन असफल होने पर बालात्कार करने पर उतर आया| चुनिया अगम के कमरे में पहुँची,"टेबुल पर चाय का गिलास रख उसने तत्क्षण लौट जाना चाहा| लेकिन इससे पहले की वह अगम के कमरे से निकल पाती, चूहे के फिराक में घात लगाकर बैठी बिल्ली की भांति अपने पलंग से उछलकर अगम ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया और दरवाजे के पास खड़ा कुटिल मुस्कान विखेरते हुए लील जाने वाली निगाहों से चुनिया को घूरने लगा, "बहुत अच्छा संयोग हाथ आया है चुन्नो .....घर में कोई नहीं है ....आज अब ना-नुकुर मत कर .....बाद में तू जो चाहेगी मैं सब करूंगा, तुझे रानी बनाकर रखूंगा | तेरी हर इच्छा मेरे सर-आँखों पर रहेगी .....|"9

अगम के छलावा प्रेम को चुनिया समझ जाती है| अगम के बदतमीजी पर चुनिया आग उगलती हुई बोली –"अपनी माँ-बहन से जाकर अइसा बोल .....उन्हीं को अपना ..... मैं तेरे घर की नौकरानी हूँ .....मुझे रंडी-पतुरिया मत समझ ...| तेरे यहाँ का मुफ्त में कुछ नहीं लेती| पसीना बहाकर कमाती हूँ ....|"12

अनेक प्रयास के बाद अगम चुनिया को नहीं पा सका तो अंतिम विकल्प के रूप में अगम ने चुनिया को अपने ही घर में जबरदस्ती करने लगा| अगम "आगे बढ़ कर उसका रास्ता रोकना चाहता तो अंगारे बरसाती आँखों से उसे बरज देती –"खबरदार जो मुझे छूने की कोशिश की .....|"

इस पर भी वह नहीं मानता तो क्रोध में उसकी बाँह झटक नागिन की तरह फुंफकार उठती –"अभी तू मुझे नहीं पहचानता ....सबके सामने तेरी मिट्टी उतार दूंगी ...|"13

".....एकदम क्रुद्ध सिंघनी की भांति उसने अगम के नाक-मुँह नोच डाले| उसके कपड़े फाड़ डाले| उसकी छाती, पसलियों और पेट में अपने हाथों और लातों के बेरहम प्रहार से उसे पस्त कर दिया ....|"

"आज तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी कमीने.....तेरा खून पी जाऊंगी नासपीटे| तुझे मारकर खतम करूंगी और अपने भी जान दूंगी...|"14

भारतीय सामाजिक परम्परा में स्त्रियों को अबला माना जाता है यह मानसिकता उनके मन-मष्तिष्क में घर कर जाती है इसके कारण वह अत्याचार, शोषण का विरोध मुखर रूप से नहीं कर पाती, लेकिन चुनिया इस धारणा को नकार कर संघर्ष करती है और शोषण से मुक्त हो जाती है| वह शोषित नारियों के प्रेरणा का विषय बन जाती है| "चुनिया श्रम-संस्कृति में पली बड़ी पिछड़ी जाति के नारियों की उत्तर-उद्धति है जिसमे प्रतिरोध-संघर्ष और परिवर्तन की आधुनिक आकांक्षाएं मूर्त हुई है |"15

उपन्यास की नायिका चुनिया का जन्म मजदूर परिवार में हुआ है| वह मिट्टी में, खेत-खलिहान में लोट-पाटकर तथा माड़-भात खाकर पली-बढ़ी है| गरीब होने के बावजूद उसमे ईमानदारी है, नैतिकता है, कर्तव्यनिष्ठता है और इसमें सबसे बड़ी बात शोषण के खिलाफ लड़ने की अदम्य साहस है| वह विपरीत परिस्थितियों में साहस के साथ काम लेती है| वह एक तरफ ममता की मूरति है तो दूसरी तरफ सिंहनी जैसी हिंसक भी है| उसके हमले से प्रतिद्वंदी को प्राणों की भीख मांगनी पड़ती है| उसमे समय, समाज और परिस्थितियों की परख है, जिससे किसी भावना में नहीं बहती बल्कि विवेक से काम लेती है| चुनिया का नारी संघर्ष, आज के सभी नारियों के लिए प्रेरणा का विषय बन जाता है| "सिमोन द बोउआ की नारी-मुक्ति की अवधारणा का प्रभाव कुछ लेखकों पर स्पष्ट देखा जा सकता है जहाँ मुक्ति का अर्थ सारे निषेधों को तोड़कर यौन सम्बन्धों की स्वतंत्रत हो जाता है| 'यह अंत नहीं' उपन्यास की नायिका की अनथक चेष्टा है कि वह पुरूष

समाज की लोलुप नजरों से अपने को बचाकर पारिवारिक जीवन को सहज रूप से जी सके|"11

बड़टोली के मनचले छोकरे चुनिया को पाना चाहते थे| जब वह घास गड़ने जाती है तो रास्ते में मनचले उसपर बोली-बोलते हैं| जब वे सफल नहीं हो सके तो चुनिया के घर में उसकी आबरू लूटने के लिए रात में आ धमकते हैं|" अपनी सोचावतट के मुताबिक उसके पास पहुँचे छोकरे ने चुनिया पर अधिकार जमाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी – "खीचतान और भाग-परा छोड़ सीधे मन से काबू में आ जा नहीं तो मार-मारकर तुझे लोथ बना देंगे| आज तू हमसे बचने वाली नहीं .....ज्यादा ना-नुकुर और नखड़ा करेगी तो तेरा अंग भंग भी कर देंगे, तुझे किसी लायक नहीं रहने देंगे| रोकने-टोकने पर तेरे बाप-माई को भी गुरिया देंगे ....|"16

छोकरों के उस सरगना ने चुनिया को डराने-धमकाने के साथ-साथ उस पर घुस्सों का प्रहार भी शुरूकर दिया था कि हार मानकर वह जमीन पकड़ ले| लेकिन वह तो जान लेने-देने की अपनी जिद के साथ बुरी तरह उससे भीड़ गयी थी – "हराम जादे, कमीने, बड़ेरे, दोगले आज तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी| मेरे साथ बरजोरी के लिए आज तुम रह ही नही पायेगा ....| असलजाद की औलाद हो तो अइसहीं डटे रहना, भागना मत .....|"17 चुनिया साहस और धैर्य के साथ बालात्कारियों का मुहतोड़ जवाब देती है| वह उनके "हमले से अपना बचाव और जवाबी हमला दोनों करने लगी थी| उसे इस बात का अफसोस था कि उसके पास कोई अस्त्र नहीं था| कुट्टी काटने की गंड़ासी भी दूसरी जगह थी और सब्जी काटने वाला पहँसुल भी अलग था| इन दोनों में से कोई उसके हाथ लग जाता तो इस हरमजादे को वह काटकर ढेर कर देती| अस्त्र के अभाव में अपना सारा क्रोध अपने दाँतों और नाखूनों को उसने सुपुर्द कर दिया था| उसने उस सरगना का मांस जगह-जगह नोचना-चीथना तथा दाँतों से काटना प्रारम्भ कर दिया था| चुनिया के इस अनपेक्षित प्रहार से वह दर्द से चीख उठा – 'अरे, बाप रे बाप ....| यह साली तो जान लेकर ही मानेगी ....|"18

रमेश दबे नारी चेतना के सम्बन्ध में लिखते हैं, "कैशोर्य में कदम रखते ही चुनिया अपने सामंत जमींदार के यहाँ घरेलू नौकरानी बनने की विवश है| मालिक का बेटा अपने सामन्ती शक्ति के जोर पर चुनिया के साथ बालात्कार तक के लिए आमदा होता है लेकिन चुनिया के लिए गरीबी देह-व्यापार नहीं, स्त्रीत्व का अर्थ अबला होना नहीं और व्यभिचारी चरित्रों के समक्ष आत्म समर्पण करना नहीं| चुनिया के गुरबत में देह का भी गर्व है, दिमाग का भी गर्व और स्त्रीत्व का भी गर्व है| इसलिए चुनिया का चरित्र प्रतिरोधी चरित्र है जो घर, खेत खलिहान, पनघट, नदीतट, हर जगह पुरूष के चरित्र को चुनौती देती है|"19

निष्कर्षत: भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री का कार्य क्षेत्र घर माना जाता| उसे अबला समझा जाता| इस रूढ़िवादी मानसिकता के कारण पुरूष रुपी बाज हमेशा झपटने के लिए तैयार रहते| चुनिया इस रूढ़िवादी मानसिकता का प्रतिकार करती है| सामन्ती और जमींदारी प्रथा में स्त्रियों को उनके घर से उठा ले जाने और उनका यौन शोषण करने की घटनाएँ होती थी| आज भी स्त्रियाँ पिछड़े गांवों में यौन-लिप्साओं की शिकार बनती हैं| लेखक ने चुनिया को नारी चेतना के रूप में उभारा है जो अपनी अदम्य साहस से अपना बचाव खुद कर सकती है| वह शोषण का विरोध ही नहीं करती बल्कि वह संघर्ष में सफल भी हो जाती है|

सन्दर्भ सूची

1. मिथिलेश्वर, यह अंत नहीं, प्रकाशक-किताबघर नई दिल्ली, संस्करण- पेपर बैक 2013, पृष्ठ 15
2. राय, विवेकी, नमामि ग्रामम, विद्या विहार नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृष्ठ 49
3. मिथिलेश्वर, यह अंत नहीं, प्रकाशक-किताबघर नई दिल्ली, संस्करण- पेपर बैक 2013, पृष्ठ 15-16
4. वही, पृष्ठ 41
5. वही, पृष्ठ 230
6. वही, पृष्ठ 230
7. वही, पृष्ठ 15
8. वही, पृष्ठ 21
9. वही, पृष्ठ 34
10. ठाकुर, डॉ.खगेन्द्र, जीवन के उत्पीड़न की अंतहीन कथा, उद्धृत- कृष्ण कुमार (सम्पादन),उपन्यास की जमीन, प्रकाशक- विजया बुक्स दिल्ली , संस्करण-प्रथम 2013, पृष्ठ 78
11. श्रीवास्तव, रामाकांत, अंतहीन संघर्ष की गाथा, उद्धृत- कृष्ण कुमार (सम्पादन), उपन्यास की जमीन, प्रकाशक- विजया बुक्स दिल्ली, संस्करण-प्रथम 2013, पृष्ठ 99
12. मिथिलेश्वर, यह अंत नहीं, प्रकाशक-किताबघर नई दिल्ली, संस्करण- पेपर बैक 2013, पृष्ठ 35
13. वही, पृष्ठ 33
14. वही, पृष्ठ 36
15. पाण्डेय भवदेव, स्त्री महाशक्ति की भूमिका की पहचान, उद्धृत- कृष्ण कुमार (सम्पादन),उपन्यास की जमीन, प्रकाशक- विजया बुक्स दिल्ली, संस्करण-प्रथम 2013, पृष्ठ 84
16. मिथिलेश्वर, यह अंत नहीं, प्रकाशक-किताबघर नई दिल्ली, संस्करण- पेपर बैक 2013, पृष्ठ 66
17. वही, पृष्ठ 66
18. वही, पृष्ठ 66
19. दवे, रमेश, मैला आंचल के बाद उजला आंचल का एक उपन्यास 'यह अंतनहीं',उद्धृत- कृष्ण कुमार (सम्पादन),उपन्यास की जमीन, प्रकाशक- विजया बुक्स दिल्ली , संस्करण- प्रथम 2013, पृष्ठ 92-93